सूरह — एक कहानी

सूरह अल-'अनकबूत

मकड़ी

पूरा सफ़र — वो आज़माइश जो दावे को साबित करती है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 29 • 69 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अ हसिबन्-नासु अंय्युत्रकू अंय्यकूलू आमन्ना व हुम ला युफ़्तनून
2. क्या लोग समझते हैं कि उन्हें छोड़ दिया जाएगा ये कहने पर कि हम ईमान लाए, और उन्हें आज़माया न जाएगा?

व मन जाहद फ़-इन्नमा युजाहिदु लि-नफ़्सिह
6. और जो कोशिश करता है वो अपने ही फ़ायदे के लिए कोशिश करता है।

व इन्न औहनल्-बुयूति ल-बैतुल्-'अनकबूत
41. और बेशक सब से कमज़ोर घर मकड़ी का घर है।

इन्नस्-सलात तन्हा 'अनिल्-फ़ह्शा-इ वल्-मुन्कर
45. बेशक नमाज़ बे-हयाई और बुराई से रोकती है।

व कूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़िल इलैना व उन्ज़िल इलैकुम व इलाहुना व इलाहुकुम वाहिद
46. और कहो: हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतरा और तुम्हारी तरफ़ उतरा, और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है।

वल्-लज़ीन जाहदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम सुबुलना
69. और जिन्होंने हमारे लिए कोशिश की, हम उन्हें ज़रूर अपने रास्ते दिखाएँगे।

क्या तुमने समझा कि तुम्हें आज़माया न जाएगा?

बेटा, ये सूरह एक ऐसे सवाल से खुलती है जो एक मोमिन की सब से आम शिकायत का जवाब देता है।

'**अलिफ़ लाम मीम। अ हसिबन्-नासु अंय्युत्रकू अंय्यकूलू आमन्ना व हुम ला युफ़्तनून — क्या लोग समझते हैं कि उन्हें छोड़ दिया जाएगा ये कहने पर: हम ईमान लाए — और उन्हें आज़माया न जाएगा?**'

बेटा, उस सवाल की ताक़त महसूस कीजिए। ये ठीक उस चीज़ की पेशगोई करता है जो हम सोचते हैं: मैं ईमान लाया, मैं नमाज़ पढ़ता हूँ, मैं अच्छा बनने की कोशिश

करता हूँ — तो मेरी ज़िंदगी मुश्किल क्यों है?

और क़ुरआन जवाब देता है: **क्या तुमने तसव्वुर किया कि इसे कह देना ही मामला ख़त्म कर देता है?**

'**व लक़द फ़तन्नल्-लज़ीन मिन क़ब्लिहिम** — और हमने यक़ीनन **उन लोगों को आज़माया** जो उन से **पहले** थे — **फ़-ल-यअ्लमन्नल्-लाहुल्-लज़ीन सदक़ू व ल-यअ्लमन्नल्-काज़िबीन** — और अल्लाह ज़रूर उन को **ज़ाहिर** करेगा जो **सच्चे** हैं, और वो ज़रूर **झूठों** को ज़ाहिर करेगा।'

बेटा, समझिए आज़माइश किस लिए है। अल्लाह पहले ही जानते हैं कौन सच्चा है — उन्हें मालूमात की ज़रूरत नहीं। **आज़माइश इसे ज़ाहिर करती है**: ये उस चीज़ को निकालती है जो एक शख़्स के अंदर थी, खुले में, ताकि दावा एक ज़ुबानी जुमले के बजाए एक साबित-शुदा हक़ीक़त बन जाए।

कोई भी आराम में 'मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूँ' कह सकता है। अल्फ़ाज़ की कोई क़ीमत नहीं। फिर तशख़ीस आती है, या नौकरी जाती है, या निकाह में खिंचाव आता है — और अब पता चलता है कि उस जुमले की अस्ल क़ीमत क्या थी।

बेटा, तो आपकी ज़िंदगी की मुश्किल इस बात की निशानी नहीं कि अल्लाह आपसे नाराज़ हैं। **ये इम्तेहान-गाह है।** और ग़ौर कीजिए — ये सूरह की **दूसरी** आयत है, ठीक शुरू में रखी गई, ताकि एक मोमिन बिल्कुल आग़ाज़ से जान ले कि क्या तवक़्क़ो रखनी है।

'**मन काना यर्जू लिक़ा-अल्-लाहि फ़-इन्न अजलल्-लाहि ल-आत** — जो **अल्लाह से मुलाक़ात** की **उम्मीद** रखता है — बेशक, अल्लाह की मुक़र्रर **मुद्दत आ** रही है — **व हुवस्-समी'उल्-'अलीम** — और वो सुनने वाला, जानने वाला है।'

बेटा, और एक ख़ूबसूरत उसूल आता है: '**व मन जाहद फ़-इन्नमा युजाहिदु लि-नफ़्सिह** — और जो **कोशिश** करता है, वो **अपने ही फ़ायदे** के लिए कोशिश करता है — **इन्नल्-लाह ल-ग़निय्युन 'अनिल्-'आलमीन** — बेशक, अल्लाह जहानों से बे-नियाज़ है।' **हर मुश्किल जो आप उसके लिए सहते हैं आप में ख़ुद एक सरमाया-कारी है।** वो आपकी जद्दो-जहद से कुछ नहीं पाते; आप सब कुछ पाते हैं।

वालिदैन, और इताअत की हद

फिर सूरह एक ख़ास और दर्दनाक आज़माइश को मुख़ातिब करती है — वो जो उन लोगों ने झेली जिनके अपने ख़ानदानों ने उन्हें इस्लाम छोड़ने पर मजबूर किया:

'**व वस्सैनल्-इंसान बि-वालिदैहि हुस्ना** — और हमने इंसान को अपने **वालिदैन** के साथ **भलाई** की ताकीद की — **व इन जाहदाक लि-तुश्रिक बी मा लैस लक बिही 'इल्मुन फ़-ला तुति'हुमा** — मगर अगर वो तुझपर ज़ोर डालें कि मेरे साथ उस चीज़ को शरीक करे जिसका तुझे इल्म नहीं, **तो उनकी बात मत मान** — **इलय्य मर्जि'उकुम फ़-उनब्बिउकुम बिमा कुन्तुम तअ्मलून** — मेरी ही तरफ़ तुम्हारा लौटना है, फिर मैं तुम्हें बताऊँगा जो तुम करते थे।'

बेटा, वही उसूल जो सूरह लुक़मान में था, और ये इस लिए दोहराया गया क्योंकि ये इतना दर्दनाक तौर पर अस्ली था: मक्का के नौजवान मर्द और औरतें जिनपर उनके प्यारे माँ-बाप रोज़ काम करते थे।

और फिर एक सतही मोमिन का बयान: '**व मिनन्-नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाह** — और लोगों में वो है जो कहता है: **हम अल्लाह पर ईमान लाए** — **फ़-इज़ा ऊज़िय फ़िल्लाहि ज'अल फ़ित्नतन्-नासि क-'अज़ाबिल्-लाह** — मगर जब उसे अल्लाह के लिए **तकलीफ़** दी जाए, वो **लोगों की आज़माइश** को **अल्लाह के अज़ाब** की तरह समझता है।'

बेटा, इसे ग़ौर से पढ़िए। वो लोगों के मज़ाक़, लोगों के दबाव, लोगों के इनकार को — यूँ समझता है गोया ये अल्लाह का अज़ाब हो। **वो भीड़ से यूँ डरता है जैसे अल्लाह से डरना चाहिए।** और यूँ वो पीछे हट जाता है।

'**व ल-इन जा-अ नस्रुम्-मिर्-रब्बिक ल-यक़ूलुन्न इन्ना कुन्ना म'अकुम** — मगर अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से फ़तह आए, तो वो ज़रूर कहेंगे: **हम तुम्हारे साथ थे!**'

बेटा, ये रहे: **मुश्किल में ग़ायब, जश्न पर हाज़िर।** हर नस्ल इस क़िस्म को जानती है। और अल्लाह का तब्सिरा: '**अ व लैसल्-लाहु बि-अअ्लम बिमा फ़ी सुदूरिल्-'आलमीन** — क्या अल्लाह सब मख़्लूक़ के सीनों में जो है उसे बेहतर नहीं जानता?'

सब से कमज़ोर घर

और अब, बेटा, वो तस्वीर जो इस सूरह को उसका नाम देती है — और ये क़ुरआन के सब से ठीक मुक़ाबलों में से एक है।

'मसलुल्-लज़ीनत्-तख़ज़ू मिन दूनिल्-लाहि औलिया-अ क-मसलिल्-'अनकबूतित्-तख़ज़त बैता — उन लोगों की मिसाल जो अल्लाह के सिवा **हिमायती** बनाते हैं **मकड़ी** की तरह है जो एक **घर** बनाती है — **व इन्न औहनल्-बुयूति ल-बैतुल्-'अनकबूत** — **और बेशक, सब से कमज़ोर घर मकड़ी का घर है** — **लौ कानू यअ्लमून** — काश वो जानते।'

बेटा, सोचिए ये मुक़ाबला इतना ठीक क्यों है।

एक मकड़ी का जाला **देखने** में मुतअस्सिर-कुन लगता है। ये बारीक, नक़्शी, एहतियात से बनाया हुआ — सुब्ह की रौशनी में ख़ूबसूरत। दूर से ये अस्ली इमारत लगता है।

और फिर भी ये वो कुछ नहीं देता जो एक घर को देना चाहिए। ये बारिश से कोई पनाह नहीं देता, हवा से कोई हिफ़ाज़त नहीं, कोई गर्मी नहीं, कोई सलामती नहीं। एक बच्चे की उँगली उसे तबाह कर देती है। हवा का एक झोंका उसे उड़ा ले जाता है।

बेटा, **यही हर वो ताल्लुक़ है जो अल्लाह के सिवा हो।** वो बचत जिसे आप अपनी सलामती समझते हो। वो ताल्लुक़ जिसे आप मानते हो कि आपकी हिफ़ाज़त करेगा। वो साख़ जो आपने बरसों बनाई। वो शख़्स जिसपर आप पूरी तरह टिकते हो। ये सब एक इमारत लगती है — और फिर एक फ़ैसले का झोंका उस में से गुज़र जाता है।

और एक और तह जिसपर उलमा ने इशारा किया: मकड़ी का जाला **फाँसने** के लिए बना घर है, पनाह देने के लिए नहीं। जो भी उस में दाख़िल हो उसे पनाह नहीं मिलती; वो ख़ुद को फँसा हुआ पाता है। बेटा, **यही ये झूठी सलामतियाँ करती हैं — वो हिफ़ाज़त का वादा करती और आख़िर में तुम्हें क़ैदी बना कर रखती हैं।**

'इन्नल्-लाह यअ्लमु मा यद्'ऊन मिन दूनिही मिन शै-इंव्-व हुवल्-'अज़ीज़ुल्-

हकीम — बेशक, अल्लाह जानता है जिसे वो उसके सिवा पुकारते हैं, और वो ग़ालिब, हिकमत वाला है।'

'**व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्-नासि व मा यअ्क़िलुहा इल्लल्-'आलिमून** — और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं, मगर **इल्म** वालों के सिवा कोई उन्हें **नहीं समझता।**'

नमाज़ बे-हयाई से रोकती है

और फिर, बेटा, नमाज़ के बारे में सब से ज़्यादा नक़्ल की गई और सब से ज़्यादा ग़लत समझी गई आयतों में से एक आती है:

'**उत्लु मा ऊहिय इलैक मिनल्-किताबि व अक़िमिस्-सलाह** — जो किताब तुम्हारी तरफ़ वही की गई उसे **पढ़ो**, और **नमाज़ क़ायम** करो — **इन्नस्-सलात तन्हा 'अनिल्-फ़ह्शा-इ वल्-मुन्कर** — **बेशक, नमाज़ बे-हयाई और बुराई से रोकती है** — **व ल-ज़िक्रुल्-लाहि अक्बर** — **और अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा है** — **वल्लाहु यअ्लमु मा तस्न'ऊन** — और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।'

बेटा, लोग पूछते हैं: मैं नमाज़ पढ़ता हूँ, तो फिर भी गुनाह क्यों करता हूँ?

और जवाब उस लफ़्ज़ में है जो अल्लाह ने चुना: '**अक़िमिस्-सलाह**' — नमाज़ **क़ायम** करो। 'अदा' करो नहीं, 'निपटा लो' नहीं। **इक़ामह** का मतलब किसी चीज़ को ठीक से खड़ा करना, सीधा और मुकम्मल — अपनी शर्तें, अपने औक़ात, अपनी आजिज़ी, अपने दिल की मौजूदगी के साथ।

एक नमाज़ जो 'क़ायम' की जाए एक शख़्स पर यूँ काम करती है जैसे पानी पत्थर पर: धीरे, ना-दिखता, और वक़्त के साथ यक़ीनी तौर पर। ये तुम्हें दिन में पाँच बार अल्लाह के सामने खड़ा करती है, और **एक शख़्स जो वाक़ई फ़ज्र के वक़्त अपने रब के सामने खड़ा होता है उसे दोपहर धोका देना मुश्किल लगता है।**

और उलमा ने एक अहम बात कही, बेटा: अगर किसी की नमाज़ उसे बिल्कुल नहीं रोक रही, तो उसे नमाज़ नहीं छोड़नी चाहिए — **उसे उसे ठीक करना चाहिए।** मसला दवा नहीं; मसला ये है कि उसे लिए बग़ैर निगला जा रहा है।

और फिर: 'व ल-ज़िक्रुल्-लाहि अक्बर' — और अल्लाह का ज़िक्र सब से **बड़ा** है। उलमा ने इसे एक से ज़्यादा तरीक़ों से समझाया, और सब से ख़ूबसूरत ये है: हर उस चीज़ से बड़ा जो तुम कर सकते हो — और उस से भी बड़ा ये कि **अल्लाह तुम्हें याद करते हैं जब तुम उन्हें याद करते हो।**

बेटा, इस ख़याल को थामे रहिए। अपनी नमाज़ के बीच में, चलते हुए अपने ज़िक्र में, सोने से पहले अपने अल्फ़ाज़ में — जहानों का रब आपका ज़िक्र करता है।

बेहतरीन अंदाज़ में बहस करो

फिर सूरह हिदायात देती है कि उन से कैसे बात की जाए जो हमसे इख़्तिलाफ़ रखते हैं — और बेटा, ये हमारे दौर में शिद्दत से दरकार है:

'**व ला तुजादिलू अह्ल्-किताबि इल्ला बिल्लती हिय अह्सन** — और **अहल-ए-किताब से सिर्फ़ उस तरीक़े से बहस करो जो बेहतरीन** हो — **इल्लल्-लज़ीन ज़लमू मिन्हुम** — सिवाए उन के जो उन में से ज़ुल्म करते हैं।'

'**व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़िल इलैना व उन्ज़िल इलैकुम** — और **कहो: हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतरा और तुम्हारी तरफ़ उतरा** — **व इलाहुना व इलाहुकुम वाहिदुंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून** — **और हमारा और तुम्हारा माबूद एक है, और हम उसी के फ़रमाँबरदार हैं।**'

बेटा, तरीक़ा देखिए। जब आप किसी दूसरे मज़हब वाले से बात करें, आपको हुक्म दिया जाता है कि **शरीक** चीज़ से शुरू करें — वही, एक ख़ुदा — न कि हमले से आग़ाज़ करें। ये कमज़ोरी नहीं; ये ज़ेहानत और अदब है। **आप किसी को अपनी तरफ़ खींच नहीं सकते जब कि साथ ही उसे दूर धकेल रहे हों।**

सूरह उन्हें नबी ﷺ की अपनी सनद भी याद दिलाती है: '**व मा कुन्त तत्लू मिन क़ब्लिही मिन किताबिंव्-व ला तख़ुत्तुहू बि-यमीनिक** — और तुम इस से पहले कोई किताब न **पढ़ते** थे, न अपने **दाएँ** हाथ से इसे **लिखते** थे — **इज़ल्-लर्-तबल्-मुब्तिलून** — वरना बातिल-परस्त शक करते।'

बेटा, ये उनकी अन-पढ़ी से ही एक दलील है: एक ऐसा आदमी जो पढ़ या लिख न

सकता था एक ऐसी किताब ले आया जिसका कभी जवाब नहीं दिया जा सका। अगर वो किताबों का आलिम होता, तो कोई दावा कर सकता था कि उसने इसे जोड़ लिया।

वो जो हमारे लिए कोशिश करते हैं

फिर सूरह आज़माए गए अंबिया को याद करती है — नूह (अलैहि0) अपनी क़ौम में नौ सौ पचास साल, इब्राहीम (अलैहि0) आग में डाले गए, लूत (अलैहि0) एक फ़ासिद क़ौम में, शुऐब (अलैहि0), 'आद, समूद, क़ारून, फ़िरऔन — और ये गिनाने के बाद कि हर एक कैसे पकड़ा गया, अल्लाह एक हैरत-अंगेज़ बात कहते हैं:

'**फ़-कुल्लन अख़ज़्ना बि-ज़म्बिह** — तो **हर एक** को हमने उसके **गुनाह** पर पकड़ा — **फ़-मिन्हुम मन अर्सल्ना 'अलैहि हासिबा** — उन में कोई वो था जिसपर हमने पत्थरों का तूफ़ान भेजा — **व मिन्हुम मन अख़ज़त्हुस्-सैहह** — और उन में कोई जिसे एक **धमाके** ने पकड़ लिया — **व मिन्हुम मन ख़सफ़्ना बिहिल्-अर्ज़** — और उन में कोई जिसे हमने ज़मीन में **धँसा** दिया — **व मिन्हुम मन अग़्रक़्ना** — और उन में कोई जिसे हमने **डुबो** दिया — **व मा कानल्-लाहु लि-यज़्लिमहुम व लाकिन कानू अन्फ़ुसहुम यज़्लिमून** — **और अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म न किया, बल्कि वो ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।**'

बेटा, चार मुख़्तलिफ़ अंजाम — और एक जैसा नतीजा: **किसी पर ज़ुल्म न हुआ।**

और इब्राहीम (अलैहि0) के बारे में, सूरह उनका एक जुमला दर्ज करती है जिसे हर घर की दीवार पर लिखा जाना चाहिए। जब उनकी क़ौम ने उन्हें जलाने की साज़िश की: '**फ़-मा काना जवाब क़ौमिही इल्ला अन क़ालुक़्-तुलूहु औ हर्रिक़ूहु फ़-अन्जाहुल्-लाहु मिनन्-नार** — उसकी क़ौम का जवाब बस ये था कि उन्होंने कहा: उसे क़त्ल करो या जला दो! **मगर अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया।**'

और अब, बेटा, सूरह की आख़िरी आयत — और ये क़ुरआन के अज़ीम वादों में से एक है:

'**वल्-लज़ीन जाहदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम सुबुलना** — **और जिन्होंने हमारे लिए**

कोशिश की — हम उन्हें ज़रूर अपने रास्ते दिखाएँगे — व इन्नल्-लाह ल-म'अल्-मुह्सिनीन — और बेशक, अल्लाह नेको-कारों के साथ है।'

बेटा, इसे खोल कर देखिए, क्योंकि ये उस सवाल का जवाब है जिस से ये सूरह खुली।

'जाहदू **फ़ीना**' — जिन्होंने **हमारे** लिए कोशिश की, हमारी राह में, हमारे लिए। 'जिहाद' यहाँ अपने वसी' मफ़्हूम में: फ़ज्र के लिए उठने में अपनी काहिली से लड़ना, अपनी ज़ुबान साफ़ रखने के लिए लड़ना, हलाल कमाने के लिए लड़ना जब हराम आसान हो, थके हुए इस दीन को सीखने के लिए लड़ना।

'**ल-नह्दियन्नहुम**' — **हम उन्हें ज़रूर हिदायत देंगे।** अरबी दोहरी ताकीद रखती है: यक़ीनन, लाज़िमन, बिना नाकामी।

'**सुबुलना**' — **हमारे रास्ते**, जमा। बेटा, एक राह नहीं — बहुत। वो ऐसे रास्ते खोलते हैं जो आपने नहीं देखे थे: एक उस्ताद ज़ाहिर होता है, एक किताब आपके हाथ आ जाती है, एक गुफ़्तगू आपकी सिम्त बदल देती है, एक रुकावट एक दरवाज़ा बन जाती है।

और **तरतीब** ग़ौर कीजिए, बेटा, क्योंकि यही पूरी आयत की कुंजी है। **कोशिश पहले आती है, और हिदायत बाद में।**

ज़्यादा तर लोग इसे उल्टा इंतेज़ार करते हैं: 'जब मुझे ज़्यादा ईमान महसूस होगा, मैं ठीक से नमाज़ शुरू करूँगा।' 'जब मेरा दिल नरम होगा, मैं क़ुरआन पढ़ूँगा।' ये आयत कहती है: **हिलो, और हिदायत तुम से मिल जाएगी।**

बेटा, जो थोड़ा तुम्हारे पास है उस के साथ उसकी तरफ़ एक क़दम लो, और वो रास्ते खोल देते हैं। यही वो वादा है जिसपर ये सूरह ख़त्म होती है — और ये उस आज़माइश का जवाब है जिस से ये शुरू हुई। **तुम्हें आज़माया जाएगा; और अगर तुम उस में से कोशिश करते गुज़रो, तो तुम्हें हिदायत दी जाएगी।**

'व इन्नल्-लाह ल-म'अल्-मुह्सिनीन' — और अल्लाह नेको-कारों के **साथ** है। सिर्फ़ उन्हें देखते हुए नहीं। उनके **साथ**।

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'हम ईमान लाए' कहना आग़ाज़ है, इख़्तिताम नहीं — आज़माइश वो है जो दावे को हक़ीक़त में बदलती है।

2. आज़माइशें इसका मतलब नहीं कि अल्लाह तुमसे नाराज़ हैं; ये इम्तेहान-गाह है।

3. लोगों की ना-पसंदीदगी से यूँ डरने से बचो जैसे अल्लाह से डरना चाहिए — यही एक सतही मोमिन को पीछे हटाता है।

4. अल्लाह के सिवा हर ताल्लुक़ एक मकड़ी का जाला है: देखने में बारीक, पनाह के तौर पर बे-कार, और फाँसने के लिए बना, हिफ़ाज़त के लिए नहीं।

5. अगर तुम्हारी नमाज़ तुम्हें नहीं रोक रही, नमाज़ को ठीक करो — उसे छोड़ो मत; 'क़ायम करो' का मतलब उसे ठीक से खड़ा करना।

6. बेहतरीन अंदाज़ में बहस करो और शरीक चीज़ से शुरू करो — तुम किसी को अपनी तरफ़ खींच नहीं सकते जब कि उसे दूर धकेल रहे हो।

7. पहले कोशिश करो और हिदायत पीछे आती है: 'जिन्होंने हमारे लिए कोशिश की, हम उन्हें ज़रूर अपने रास्ते दिखाएँगे।'

या अल्लाह, हमें आज़माइश में सच्चा बना दीजिए, हमारे मकड़ी-जाले घरों पर भरोसा हटा दीजिए, और जब हम कोशिश करें हमें अपने रास्ते दिखाइए। आमीन।